

## विचार बिन्दु

घर का मोह कायरता का दूसरा नाम है। -अज्ञात

## पुराने वनों का संरक्षण सबसे बड़ा प्राकृतिक जलवायु समाधान है

ऐसे वनों के पारिस्थितिक, सामाजिक और आर्थिक महत्त्व पर विश्व भर में बड़ी शोध हुई है। ओल्ड-ग्रोथ फॉरेस्ट्स की अभी भी कोई एक मानक परिभाषा नहीं है। फिर भी इन वनों में प्रमुख प्रजातियों की लंबी उम्र, प्राकृतिक गडबडी का कम से कम होना, मानव हस्तक्षेप का कम होना, छाया-सहिष्णुता या छाया में भी उग सकने वाली प्रजातियों की बहुलता, विशिष्ट संरचनाओं, जैसे बड़े-बड़े पेड़, खोखलों में घोंसले बनाने वाले पक्षियों की उपस्थिति और बहुतायत, भारी-भरकम पुराने वृक्षों के यत्र तत्र गिरे-पड़े संचित सूखे तना, मिट्टी के ऊपर पत्तियों और सूखी टहनियों की मोटी परत आदि लक्षणों के संदर्भ में पहचाना और परिभाषित किया जाता है। इन क्षेत्रों में मिलने वाले बड़े वृक्षों में मधुमक्खियों के छत्ते भी प्रायः देखे जाते हैं। इसके अलावा बड़े वृक्षों के मुख्य तने में छाल में निवास करने वाले विविध प्रजातियों में कौड़े-मकोड़े पाये जाते हैं। सैप्रोजायलिक कवक, लाइकेन तथा कौड़ों की प्रजातियाँ बड़ी संख्या में सूखी गिरी पडी लकड़ी पर निर्भर होती हैं।

ओल्ड-ग्रोथ फॉरेस्ट के नीचे की मिट्टी को सबसे बड़ी खासियत यह है कि इसमें पोषक तत्वों की प्रायः कोई कमी नहीं पाई जाती। नाइट्रोजन, फास्फोरस और पोटेशियम के साथ सूक्ष्म पोषक तत्व भी प्रचुर मात्रा में मिलते हैं क्योंकि यदि आग, चराई और कटाव नहीं हो रहा है तो बायोजियोकेमिकल चक्र सुचारु रूप से चलते हैं। ऐसा संभव है ओल्ड-ग्रोथ फॉरेस्ट्स के आसपास कोई नदी नाला या नम भूमि इत्यादि हो। प्रायः यह भी देखा गया है कि ओल्ड ग्रोथ फॉरेस्ट्स में पौधों और प्राणियों की जो प्रजातियाँ मिलती हैं वे समीपवर्ती वन क्षेत्रों से कुछ भिन्न हो सकती हैं। इन क्षेत्रों में प्रायः बड़े बीजों वाली प्राणी-विकीर्णित वृक्ष प्रजातियों का बाहुल्य होता है।

उष्णकटिबंधीय वनों में जहाँ प्रजातियों की विविधता और प्राकृतिक वातावरण पर मानव दबाव दोनों ही अधिक हैं, भूमि-उपयोग परिवर्तन जैव-विविधता को गंभीर खतरों में डालते हैं। कृषि, लकड़ी के लिये कटाव, उद्योगों की स्थापना और अन्य उपयोगों के लिये उष्णकटिबंधीय वनों के तेजी से बदलाव उष्णकटिबंधीय जैव-विविधता को नष्ट कर देते हैं। एक शोध जो 138 अध्ययनों की मेटा-एनालिसिस का उपयोग कर के गया, के परिणाम उष्णकटिबंधीय जंगलों में मानवीय दखल के कारण विविधता और भूमि रूपांतरण से जैव-विविधता पर पड़ने वाले प्रभाव का वैश्विक मूल्यांकन प्रदान करते हैं (देखें, एल. गिब्सन इत्यादि, नेचर, 478(7369):378-381, 2011)। इस अध्ययन में प्राथमिक वनों जिनमें कोई मानवीय दखल नहीं था और बिगड़े वनों जिनमें मानवीय दखल था, में जैव-विविधता का तुलनात्मक विश्लेषण किया गया। यह पाया गया अवक्रमित या बिगड़े वनों में जैव-विविधता की स्थिति तमाम कारणों से बहुत खराब थी। यह वैश्विक शोध निर्विवाद रूप से सिद्ध करती है की वन-विनाश के विविध कारणों का उष्णकटिबंधीय जैव-विविधता पर अत्यंत हानिकारक प्रभाव पड़ता है। उपरोक्त एवं अन्य शोध के परिणाम स्पष्ट रूप से इंगित करते हैं कि जब उष्णकटिबंधीय जैव-विविधता को बनाये रखने की बात आती है, तो प्राथमिक वनों का कोई विकल्प नहीं है (देखें, जे. बालो इत्यादि, प्रोसीडिंग्स ऑफ़ द नेशनल अकेडमी ऑफ़ साइंसेज यूनाइटेड स्टेट्स ऑफ़ अमेरिका, 104(47):18555-18560, 2007)।

संपूर्ण विश्व के कुल 23 से 26 प्रतिशत वन ही अब प्राइमरी या ओल्ड ग्रोथ फॉरेस्ट्स के रूप में बचे हैं। राजस्थान में कई जिलों में ओल्ड ग्रोथ फॉरेस्ट्स अभी भी बचे हुये हैं, हालांकि ऐसे वन उष्णकटिबंधीय शुष्क क्षेत्रों में विशेष रूप से संकटापन्न हैं। संकट के मुख्य कारण आसपास रहने वाली मानव आबादी के पालतू मवेशियों द्वारा चराई, जलाऊ लकड़ी के लिये कटाई और घर बनाने के लिये इमारती लकड़ी की कटाई इत्यादि हैं। ऊपर से प्राकृतिक और मानव-जनित कारणों से आग भी ओल्ड-ग्रोथ फॉरेस्ट्स को बड़ी हानि पहुँचती है। कई क्षेत्रों में बड़े वृक्षों की शाखाओं को काट कर साल दर साल चारे के रूप में भी प्रयोग किया जाता है। उदाहरण के लिये पुराने वनों से अर्जुन (कहुआ, कोहड़ा) के बड़े वृक्षों की शाखाओं को काटकर मैसों के चारे के रूप में उपयोग होता है। हर साल शाखा कटाव के कारण इन वृक्षों में फूल, फल और बीज लगाने की प्रक्रिया भी बाधित होती है। बीजों का उत्पादन और विकीर्णन नहीं होने से प्राकृतिक पुनरुत्पादन बाधित होता है। जिन क्षेत्रों में बीजों का उत्पादन होता भी है वहाँ बीज विकीर्णन करने वाली वन्य-प्राणी प्रजातियाँ ना होने से अब केवल बड़े वृक्ष ही बचे हैं क्योंकि प्राकृतिक पुनरुत्पादन नहीं के बराबर है। जो भी थोड़ा बहुत पौधे उगते हैं वे भी बड़े होने के पहले ही चर लिये जाते हैं। आग का भी प्रकोप होता है, हालांकि उष्णकटिबंधीय शुष्क वनों में पिछले 30 वर्षों वनों में प्रायः सतही आग ही लगी है। इससे बड़े वृक्षों को भले ही हानि ना होती हो, किंतु बीजों, बिजुलों व प्राकृतिक पुनरुत्पादन को बड़ी हानि पहुँचती है। क्लाइमेट चेंज की

पुराने वनों का संरक्षण और प्रबंध प्राकृतिक जलवायु समाधान के रूप में विशेष महत्त्व रखता है। कार्बन सीक्वेट्रेशन और भंडारण के साथ ही इन वनों के अनगिनत लाभ हैं। वनानुभव व पारिस्थितिक पर्यटन, मानव के मानसिक और शारीरिक स्वास्थ्य हेतु संसाधन, जैव-विविधता व अनुवंशिक संसाधन का संरक्षण, भौम-जलस्तर में बढ़त व जल-धाराओं, झरनों व नदियों के रूप में पानी की उपलब्धता, देवनों के रूप में स्थानीय सांस्कृतिक मूल्यों के वाहक होते हैं।

दशम में आर्द्र तराई क्षेत्रों के वनों में हर जगह पुराने जंगलों में जमीन के ऊपर के जैवभार (बायोमास) में कमी को भारी आशंका है। उष्ण कटिबंध में वर्ष 2081-2100 के मध्य तक तापमान बढ़ने के कारण इस कमी का अनुमान 43 प्रतिशत और विश्व स्तर पर 21 प्रतिशत है (देखें, एम. लार्जोवारा इत्यादि, कार्बन बैलेंस एंड मैनेजमेंट, 16(1):31-32, 2001)।

पुराने वनों का संरक्षण और प्रबंध प्राकृतिक जलवायु समाधान के रूप में विशेष महत्त्व रखता है। कार्बन सीक्वेट्रेशन और भंडारण के साथ ही इन वनों के अनगिनत लाभ हैं। वनानुभव व पारिस्थितिक पर्यटन, मानव के मानसिक और शारीरिक स्वास्थ्य हेतु संसाधन, जैव-विविधता व अनुवंशिक संसाधन का संरक्षण, भौम-जलस्तर में बढ़त व जल-धाराओं, झरनों व नदियों के रूप में पानी की उपलब्धता, देवनों के रूप में स्थानीय सांस्कृतिक मूल्यों के वाहक होते हैं। ऐसे वनों के संरक्षण को बढ़ावा देने वाली रणनीतियों केवल इन वनों को केन्द्रित कर बनाये जाने के बजाय सम्पूर्ण भू-परिदृश्य के स्तर पर बनाना आवश्यक होता है। पहली बात इनमें बड़े वृक्षों की बहुतायत के कारण बड़ी मात्रा में कार्बन जमा होता है और सैकड़ों साल तक होता रहता है, इसीलिये ओल्ड-ग्रोथ फॉरेस्ट्स को विश्व के कार्बन भण्डार के रूप में जाना जाता है। क्लाइमेट चेंज मिटोगेशन के लिएएह भण्डार अति महत्वपूर्ण है (देखें, एस. लुस्वेट्ट इत्यादि, नेचर, 455(7210):213-215, 2008)। दूसरी बात यह है कि पुराने पेड़ों में अणुशक्त स्थिर विकास दर होती है, जो ग्लोबल वार्मिंग के विरुद्ध उल्लेखनीय प्रतिरोध देती है (देखें, एम. कोलैंगो इत्यादि, साइंस ऑफ़ द टोटल एनवायरनमेंट, 801,149684, 2021)। इसके साथ ही सर्वाधिक महत्वपूर्ण बात यह है कि ऐसे वन अत्यन्त रूप से वनों के पुनर्स्थापन के लिये उन प्रजातियों के बीजों और जैव-विविधता के सबसे महत्वपूर्ण स्रोत हैं जो लोगों के सामाजिक-सांस्कृतिक जीवन में महत्वपूर्ण स्थान रखती हैं किन्तु उष्णकटिबंधीय वनों के अन्य क्षेत्रों से स्थानीय रूप से विलुप्त हो चुकी हैं (देखें, डी.एन. पाण्डेय, कन्वेंशन बायोलॉजी, 17(2):633-635, 2003)।

इसी बात को ध्यान में रखते हुये देश के विभिन्न राज्यों में सभी ओल्ड-ग्रोथ फॉरेस्ट्स को चिन्हित कर संरक्षण व संवर्धन एवं सतत विकास किया जाना आवश्यक है। इन क्षेत्रों के अंदर पुराने और बड़े वृक्षों का संरक्षण और साथ में संपूर्ण क्षेत्र का संरक्षण दोनों को ही ध्यान रखना आवश्यक है। यहाँ चराई और कटाई से बचाव के साथ-साथ यहाँ सूखी गिरी पडी लकड़ी को भी बाहर निकालने से रोकना आवश्यक है। जैसा कि ऊपर बताया गया है सूखे गिरे पड़े वृक्ष भी तमाम प्रजातियों के संरक्षण के लिये आवश्यक है।

यदि इन क्षेत्रों में प्राकृतिक पुनरुत्पादन नहीं हो रहा है तो वनों के वितान में जहाँ खुले स्थान मिल रहे हैं वहाँ पर उसी प्रकार की प्रजातियों का रोपण आवश्यक है जो ओल्ड-ग्रोथ फॉरेस्ट में पाई जाती है। ऐसी प्रजातियाँ प्रायः बड़े बीजों वाली और चौड़ी पत्ती वाली होती हैं। बड़े बीज होने से इनका विकीर्णन बड़े शरीर वाले प्राणियों द्वारा ही हो सकता है परंतु चूंकि अनेक क्षेत्रों से बड़े शरीर वाले प्राणी विलुप्त हो चुके हैं इसलिए हमें वृक्षारोपण, सीधी बुवाई और उड़दारापण करना आवश्यक हो जाता है। उदाहरण के लिए राजस्थान में बड़े बीजों वाली प्रजातियों में आम, महुआ, जामुन, अर्जुन, बहेडा, सादड़, कणज, घटबोर, लिसोडा, बीजासाल, खाखरा, कडवाया, सीताफल, बेल, नीम, कचनार, तेंदु, बिस्देंदु, गोदल, ऊँचिया, इमली, सांगवान, बेर, खजूर, अचार या चारोली, कुसुम, हिंगोद, अरीटा, आदि शामिल हैं। कुछ ऐसी प्रजातियाँ भी उगाना चाहिये जो फलों के लिये प्रसिद्ध हैं, भले ही वे छोटे बीज वाली हों। आँवला, बरगद, कैथगूलर, पीपल, कैर, लिसोडा, जाल, खेजड़ी आदि फल के लिये जानी जाती हैं (देखें, डी.एन. पाण्डेय, अरावली के वन्य वृक्ष: वनवर्धन एवं पौधशाला प्रबंध, पृष्ठ 1-24, 1992)।

चूंकि ओल्ड-ग्रोथ फॉरेस्ट्स का दायरा धीरे धीरे बढ़ाना आवश्यक है। इसके लिए सबसे उपयोगी यह है कि ऐसे क्षेत्रों को फॉरेस्ट रेस्टोरेशन के लिये चयनित किये जा रहे बड़े क्षेत्रों के अंदर लेकर बड़े दायरे में बीजारोपण व बहुत आवश्यक हो तो वृक्षारोपण करना चाहिये। बाहर के दायरे में जहाँ प्रजाति विविधता कम है या क्षेत्र खाली हो गये हैं वहाँ पर जल सँकसेशनल, मिड-सक्सेशनल, और लेट-सक्सेशनल प्रजातियों के मिश्रण की मूदा व अल सँकसेशन के साथ सीधी बुवाई किया जाना उपयोगी रहेगा। साथ ही थोड़ी-बहुत वनस्पति जो उस क्षेत्र में हो उसका संरक्षण करना उपयोगी रहेगा। ऐसा करने से धीरे-धीरे ओल्ड-ग्रोथ फॉरेस्ट का दायरा बढ़ने लगेगा। इस रणनीति का एक लाभ यह भी है कि क्षेत्र में पक्षियों द्वारा विकीर्णित होने वाले बीजों का विकीर्णन भी प्रचुर वृक्षारोपण क्षेत्र में बढ़ेगा। सुरक्षित क्षेत्र में होने वाला अंकुरण और पनपने वाले पौधों के सुरक्षित बड़े पौधों के रूप में विकसित होने की संभावना बढ़ जाती है।

प्राचीन, विशालकाय वृक्षों वाले उष्णकटिबंधीय वन जैव-विविधता की जीती-जागती अनमोल विरासत हैं। इनका संरक्षण वैश्विक प्राथमिकता है। उष्णकटिबंधीय वनों और जैव-विविधता से मानवता को प्राप्त होने वाले सामाजिक, आर्थिक और पर्यावरणीय लाभ हेतु पुराने प्राथमिक वनों का कोई विकल्प नहीं है। प्राकृतिक जलवायु समाधान के रूप में इन वनों के प्रमाण-आधारित प्रबंध में निवेश अनिवार्य है।

-अतिथि सम्पादक,  
डॉ. दीप नारायण पाण्डेय  
(भारतीय वन सेवा से सेवानिवृत्त; वर्तमान में अनेक विश्वविद्यालयों में विजिटिंग प्रोफेसर)  
(यह लेखक के निजी विचार हैं और 'सार्वभौमिक कल्याण के सिद्धांत' से प्रेरित हैं)



भागचंद्र जैन मित्रपुरा

इस जंबूद्वीप, भारत क्षेत्र काशी देश में बनारस नाम का एक नगर है। उसमें कश्यप गोत्री राजा विश्वसेन राज्य करते थे। उनकी रानी का नाम ब्राह्मी था। जब सोलहवें स्वर्ग के इन्द्र की आयु छह मास की अवशेष रह गई थी, तब इन्द्र की आज्ञा से कुबेर ने माता के आँगन में रत्नों की बरसात शुरू कर दी थी। रानी ब्राह्मी ने सोलह स्वर्णपूर्वक वैशाख कृष्णद्वितीया - देहवर्ष मरकट मणि सद्युष्य हस्तिवर्ष के दिन इन्द्र के जीव को गंध में धारण किया था। नवमास पूर्ण होने पर पौष कृष्ण एकादशी के दिन पुत्र का जन्म हुआ। इन्द्रादि देवों ने सुमेरु पर्वत पर ले जाकर तीर्थंकर शिशु का जन्माभिषेक करके 'पार्वनाथ' नामकरण किया। इनकी आयु सौ वर्ष की थी। प्रभु की कान्ति - देहवर्ष मरकट मणि सद्युष्य हस्तिवर्ष की एवं शरीर की ऊँचाई नौ हाथ प्रमाण थी। ये उग्रवंशी थे। भगवान पार्वनाथ ने 30 वर्ष की अल्प आयु में ही तप धारण कर लिया था।

सोलह वर्ष की आयु में पार्वनाथ

## तीर्थंकर पार्वनाथ का मोक्ष कल्याणक दिवस

एक दिन अपने इष्ट मित्रों के साथ वन में गए हुए थे, तब मार्ग में पंचागिनियों में तप करता हुआ एक साधु मिला, वह अग्नि को प्रदीप करने के लिए कुल्हाड़ी से एक मोटी लकड़ी को काटना चाह रहा था। अवधी ज्ञान से जानकर भगवान पार्व ने लकड़ी को काटने के लिए मना किया और कहा-इसके भीतर 2 प्राणी बड़े हुए हैं। किन्तु मना करने पर भी उसने लकड़ी काट ही डाली, तत्क्षण ही उसके भीतर रहने वाले सर्प और सर्पिणी निकल पड़े और घायल हो जाने से छटपटाने लगे। पीड़ा से तड़पते हुए सर्प के जोड़े को भगवान पारसनाथ ने शांत होकर तीर्थंकर शिशु का जन्माभिषेक करके 'पार्वनाथ' नामकरण किया। इनकी आयु सौ वर्ष की थी। प्रभु की कान्ति - देहवर्ष मरकट मणि सद्युष्य हस्तिवर्ष की एवं शरीर की ऊँचाई नौ हाथ प्रमाण थी। ये उग्रवंशी थे। भगवान पार्वनाथ ने 30 वर्ष की अल्प आयु में ही तप धारण कर लिया था।

वासना को छोड़कर दीक्षा लेने का निश्चय कर लिया। ऐसा सोचते हुए भगवान गृहवास से पूर्ण विरक्त हो गये और लौकिक दैवों द्वारा पूजा को प्राप्त हुए। प्रभु देवों द्वारा लाई गई विमला नाम की पालकी पर बैठकर अश्व वन में पहुँच गये। वहाँ त्रिदिवसीय उपवास का नियम लेकर पौष कृष्ण एकादशी के दिन प्रातःकाल के समय सिद्ध भगवान को नमस्कार करते प्रभु तीन सौ राजाओं के साथ दीक्षित हो गये। प्रथम पारणा के दिन गुलमसेटपुर में प्रवेश किया। नगर के धन्य नामक राजा ने अष्ट मंगल द्रव्यों से प्रभु का पङ्गाहन कर प्रथम पारणा पायस का आहार कराया। आहार से प्रभावित होकर देवों ने धन्य राजा के घर पंचाशद्वि प्रकट किए। छद्मस्थ अवस्था के चार मास व्यतीत हो जाने पर भगवान अश्वव्रत में पंडुचकर देवदार वृक्ष के नीचे विराजमान होकर ध्यान में लीन हो गये। इसी समय कमठ का जीव कालसंवर नाम का ज्योतिषी देव आकाशमार्ग से जा रहा था, अकस्मात् उसका विमान रुक गया, उसे विभागाविधि से पूर्व का बैर बंध स्पष्ट दिखने लगा। बदले की भावना से क्रोधवश महागर्जना, महावृष्टि, तूफान आदि से महा उपसर्ग करना प्रारम्भ कर दिया। बड़े-बड़े पहाड़ तब लालकर दस में लीन पार्वर्षप्रभु के समीप गिराये इस प्रकार उसने सात दिन तक लगातार भयंकर उपसर्ग किया। अवधिज्ञान से यह उपसर्ग जानकर धरणेन्द्र और पद्मावती प्रथ्वी तल से बाहर निकलकर भगवान को सब ओर से घेरकर धरणेन्द्र

ने अपने फणों के ऊपर उठा लिया और पद्मावती वक्रमायु छत्र तान कर खड़ी हो गई। इस तरह स्वभाव से ही क्रूर प्राणी इन सर्प-सर्पिणी ने अपने ऊपर किये गये उपकार को याद रख कर तपस्या में लीन भगवान पर उपसर्ग के समय रक्षा की। तदनंतर ध्यान के प्रभाव से प्रभु का मोहनीय कर्मक्षीण हो गया और बैरी कमठ का सब उपसर्ग दूर हो गया। मुनिराज पार्वनाथ ने चैत्र कृष्ण चतुर्थी के दिन प्रातःकाल के समय विशाखा नक्षत्र में लोकालोकप्रकाशी केवलज्ञान को प्राप्त भगवान पर उपसर्ग के समय रक्षा की। समवसरण की रचना करके केवलज्ञान की पूजा की। कालसंवर नाम का देव भी काललब्धि पाकर उसी समय शांत हो गया और उसने उम्मीददर्शन प्राप्त कर लिया। यह देख, उस वन में रहने वाले सात सौ तपस्वियों ने मिथ्यादर्शन छोड़कर संयम धारण कर लिया, सभी शुद्ध सम्यग्दृष्टि हो गये और बड़े आदर से प्रदक्षिणा देकर भगवान की स्तुति-भक्ति की। आचार्य कहते हैं कि पापी कमठ के जीव का कर्हों तो निष्कारण बैर और कर्हों शांति। इसलिए संसार के दुःखों से भयभीत प्राणियों को वैर-विरोध का सर्वथा त्याग कर देना चाहिए। पार्वर्षप्रभु ने 83 दिन की कठोर तपस्या के पश्चात 84वें दिन केवलज्ञान प्राप्त कर लिया था।

भगवान पार्वनाथ के समवसरण में स्वयंभू सहित दस गणधर, सोलह हजार मुनिराज, सुलोचना आदि सहित छत्तीस हजार गणिनि आर्थाकार्य, एक लाख श्रावक और तीन लाख श्रविकाएँ थीं। इस प्रकार बारह सभाओं को धर्मोपदेश

देते हुए भगवान ने उनहर वर्य सात माह तक विहार किया। अंत में आयु का एक माह शेष रहने पर विहार करना बंद हो गया। प्रभु पार्वनाथ समवेदाचार के शिखर पर छत्तीस मुनियों के साथ प्रतिमायोग से विराजमान हो गये। श्रावण शुक्ला सप्तमी के दिन प्रातःकाल के समय विशाखा नक्षत्र में अष्ट कर्मों का नाश कर सिद्धपद को प्राप्त हो गये। देवों ने भक्ति पूर्वक उनके निर्माण कल्याण का उत्सव किया। इस दिन को मोक्ष सप्तमी के रूप में भी मनाया जाता है। एवम अपना भव कल्याणकारी बनाने की दृष्टि से कल्याण ब्रत/उपवास रखती है। यद्यपि उपवास/ब्रत कोई भी रख सकता है। श्री पार्वनाथ ने ही जैन धर्म के पंच महाव्रत की शिक्षा दी जिनमें सत्य, अहिंसा, अस्तेय, एवम अपरिग्रह जिसमें ब्रह्मचर्य भी सम्मिलित है। अपरिग्रह एवं ब्रह्मचर्य का समावेश एक ही व्रत में होता था।

श्री पार्वनाथ ने ही चतुर्विध संघ की स्थापना की थी जिनमें मुनि, आर्थाका, श्रावक एवं श्रविका होते थे। आज भी जैन समाज की यही परंपरा जारी है। भगवान पार्वनाथ ने जैन धर्म को जन जन के बीच लोकप्रिय बनाकर एक ऐसा महत्वपूर्ण कार्य कर गए, जिसकी आभा आज भी जीवन्त है। भूमार्ग प्रकट होने वाली प्रतिमाएँ एवं जिन मंदिरों में विराजित सबसे ज्यादा प्रतिमाएँ तेईसवें तीर्थंकर भगवान पार्वनाथ की ही हैं।

संकलन--भागचंद्र जैन मित्रपुरा  
अध्यक्ष अखिल भारतीय जैन बैकर्स फोरम जयपुर।

## राज्यपाल किसनराव बागड़े ने मुनाबाव सीमा चौकी से भारत-पाक सीमा का अवलोकन किया

राज्यपाल बागड़े ने बीएसएफ जवानों की हाँसला अफजाई कर पराक्रम की सराहना की

बाड़मेर, (निस्)। राज्यपाल हरिभाऊ किसनराव बागड़े ने शनिवार मुनाबाव सीमा चौकी से भारत-पाक सीमा का अवलोकन कर बीएसएफ के जवानों से संवाद किया। राज्यपाल हरिभाऊ किसनराव बागड़े ने राष्ट्र सेवा में जवानों की तत्परता के लिए उनकी हाँसला अफजाई करते हुए पराक्रम की सराहना की। मुनाबाव में प्रहरी सम्मेलन के दौरान राज्यपाल बागड़े ने कहा कि सैनिक सरहद की हिफाजत के लिए सतर्क हैं। वे विपरित परिस्थितियों में देश सेवा के लिए तत्पर हैं।

उन्होंने देश के प्रति प्रेम एवं निस्वार्थ सेवा के लिए जवानों का नमन करते हुए कहा कि वे अदम्य साहस के लिए सैनिकों का अभिनेत्र करते हैं। उन्होंने चाह नहीं है सुरवाला के गहनों में गुंथा जाऊ और तेरा पहर अपन रहे मैं। रहूँ या ना रहूँ का जिक्र करते हुए कहा कि जवानों के सम्पर्ण की बदौलत भारत सुरक्षित है। उन्होंने कहा कि जाबाज सैनिक मां भारती के वह सपूत हैं, जिनके कंधे पर राष्ट्र की सुरक्षा का भार है। इस दौरान उन्होंने सीमा सुरक्षा बल एवं सुरक्षा एजेंसियों की सुरक्षा समन्वय संबंधित बैठक के दौरान सीमा प्रबंधन सरहद पर से



बाड़मेर में भारत-पाक सीमा पर राज्यपाल हरिभाऊ किसनराव बागड़े ने सेना के जवानों से मुलाकात की।

तस्कारी एवं अन्य गतिविधियों के बारे में जानकारी ली। उन्होंने सरहद पर रहने वाले ग्रामीण परिवारों की सराहना करते हुए राइ की सुरक्षा में उनकी भूमिका को महत्वपूर्ण बताया। राज्यपाल बागड़े ने सीमा सुरक्षा बल के जवानों को मिठाई एवं फल भेंट किए। सीमा सुरक्षा बल की ओर से राज्यपाल को स्मृति चिह्न

भेंट किया गया। उन्होंने मुनाबाव में कॉन्फ्रेंस हॉल के पास एक पेड़ मां के नाम अभियान के तहत पौधारोपण किया। इससे पहले राज्यपाल के मुनाबाव पहुंचने पर बीएसएफ के जवानों गार्ड ऑफ आन दिया। इस दौरान बीएसएफ गुजरात फ्रीटियर के महानरीक्षक अभिषेक

पाठक, उप महानरीक्षक राजकुमार बसड़ा, जिला कलेक्टर निशान्त जैन, पुलिस अधीक्षक नरेन्द्रसिंह मोना, मुख्य कार्यकारी अधिकारी सिद्धार्थ पलनीचामी, शिव विधायक रविन्द्रसिंह, समाजसेवी स्वरूपसिंह खारा सहित विभिन्न सीमा सुरक्षा बल एवं विभिन्न सुरक्षा एजेंसियों के

अधिकारी, जवान आदि उपस्थित रहे। राज्यपाल ने जन संवाद के साथ ग्रामीणों की भूतारि वित्तद्वारा : बाड़मेर के सीमावर्ती क्षेत्रों में पहुंचे राज्यपाल हरिभाऊ किसनराव बागड़े ने तामलोर ग्राम पंचायत में ग्रामीणों से जन संवाद करते हुए जानकारी ली कि उनको प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि के साथ कौनसी योजनाओं का लाभ मिल रहा है।

ग्रामीणों ने बताया कि उनके छातों से डोबीटी के जरिए राशि जमा हो रही है। इस दौरान ग्रामीणों ने प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र खोलने, मुनाबाव को पर्यटन स्थल के रूप में विकसित करने समेत विभिन्न प्रकार की परिवेदनाओं से अवगत कराया। राज्यपाल बागड़े ने राडमावि तामलोर में अतिरिक्त कक्षा कक्ष एवं कंप्यूटर कक्षा का निर्माण किया। उन्होंने विद्यालय के परिणाम परिणाम के बारे में जानकारी लेते हुए दसवीं कक्षा में अनुत्तीर्ण हुए विद्यार्थियों का दुबारा अध्ययन सुनिश्चित करवाने के निर्देश दिए। इस दौरान राज्यपाल बागड़े ने विद्यार्थियों के साथ हर घर तिरंगा अभियान का संदेश देते हुए थुप फोटो खिंचवाया। उन्होंने कहा कि हर घर पर तिरंगा अवश्य फहराए।

## प्रधानाचार्य के जन्मदिन पर छात्र-छात्राओं ने पौधे लगाये

स्वामी विवेकानंद राज.मॉडल स्कूल निवाई में छात्र-छात्राओं व शिक्षकों ने सराहनीय पहल की

निवाई, (निस्)। स्वामी विवेकानंद राजकीय मॉडल स्कूल निवाई में छात्र-छात्राओं व शिक्षकों ने सराहनीय पहल करते हुए प्रधानाचार्य कुंभाराम चौधरी 57वें जन्मदिन पर 51 छात्राचार्य पौधे लगाकर सराहनीय कार्य किया। प्रधानाचार्य ने बताया कि अब प्रत्येक

कर्मचारी और विद्यार्थी अपने जन्म दिवस पर प्रतिवर्ष पांच वृक्ष लगाकर पर्यावरण संरक्षण को बढ़ावा देंगे। इस दौरान सभी विद्यार्थियों और शिक्षक साधियों ने प्रधानाचार्य चौधरी को तिलक माला और साफा बंधवाकर शुभकामनाएं दी। उन्होंने आन्धान करते हुए कहा कि ऐसे ही

विद्यार्थियों और शिक्षक साधियों ने प्रधानाचार्य चौधरी को तिलक माला और साफा बंधवाकर शुभकामनाएं दी

विवेकानंद मॉडल विद्यालय उन्नति और तरक्की करता रहे और नए-नए आयाम और कीर्तिमान स्थापित करता रहे।

इस अवसर पर उप प्रधानाचार्य ललित कुमार बेनीवाल, व्याख्याता विनोद कुमार शर्मा, विकास गुर्जर, कमलसिंह गुर्जर, योगेश शर्मा,

अंकित राजावत, जीशान अहमद, हनुमान गुर्जर, मदनमोहन मीणा, राजवीर चौधरी, रमेशचंद्र मीणा, आरती तिवारी, कुंती शर्मा, दिव्यानी शर्मा, सोनु सोनी, सुदेश बाई, सुनीता गुर्जर, अमित कुमार शर्मा व निकलेस सैन सहित छात्र-छात्राओं व समस्त स्टाफ मौजूद था।

## राशिफल रविवार 11 अगस्त, 2024



पंडित अनिल शर्मा

सावन मास, शुक्ल पक्ष, सप्तमी तिथि, रविवार, विक्रम संवत 2081, स्वाती नक्षत्र सोमवार प्रातः 8:33 तक, शुभ योग दिन 3:48 तक, गर करण सांय 6:51 तक, चन्द्रमा तुला राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थिति: सूर्य-कर्क,

चन्द्रमा-तुला, मंगल-वृष, बुध-

सिंह, गुरू-वृष, शुक-सिंह, शनि-कुम्भ, राहु-मीन,

केतु-कन्या राशि में।

आज बुध अस्त पश्चिम में सांय 6:07 पर होगा। आज

भानु सप्तमी, महापात योग दिन 10:12 से दिन 2:55 तक

है। आज से कल्याण धणी, डिग्गीपुरी पद यात्रा आरम्भ होगी।

श्रेष्ठ चौचडिया: चर 7:38 से 9:16 तक, लाभ-अमृत

9:16 से 12:32 तक, शुभ 2:10 से 3:48 तक।

राहूकाल: 4:30 से 6:00 तक। सूर्योदय 6:00,

सूर्यास्त 7:04

मेघ

परिवार में मनोरंजन के कार्यक्रम बन सकते हैं। परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा। सामूहिक प्रयासों से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है।

वृष

व्यक्तिगत प्रयासों से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। महत्वपूर्ण कार्यों में उचित सफलता से मनोबल बढ़ेगा। स्वास्थ्य में सुधार होगा। मन में बना भय दूर होगा।

मिथुन

परिवार में शुभ-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। महत्वपूर्ण कार्यों के संबंध में सोच-विचार हो सकता है और उचित परामर्श मिल सकता है। धार्मिक स्थान की यात्रा संभव है।

कर्क

घर-परिवार में सुख-सुविधाएँ बढ़ेंगी। सुख-साँत बनी रहेगी। परिवार में अतिथियों के आमनन से उत्सव जैसा माहौल रहेगा। महत्वपूर्ण कार्यों में सफलता से मनोबल बढ़ेगा। अटका हुआ धन प्राप्त होगा।

सिंह

परिवार में मन को प्रसन करने वाले संदेश प्राप्त होंगे। परिवर्तनों के सहयोग से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। आज नये-पुराने मित्रों से मुलाकात हो सकती है। मनोरंजन के कार्यक्रम बन सकते हैं।

कन्या

आर्थिक स्थिति में सुधार होगा। आय में वृद्धि होगी। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। आवश्यक और व्यक्तिगत कार्य के लिए बाहर जाने का कार्यक्रम बन सकता है।

तुला

मानसिक तनाव से राहत मिलेगी। मन:स्थिति में सुधार होगा। आवश्यक और महत्वपूर्ण कार्य योजनानुसार बनने लगे। स्वास्थ्य में सुधार होगा।

वृश्चिक

धार्मिक कार्यों पर धन खर्च हो सकता है। शुभ कार्य के लिए यात्रा संभव है। घर-गृहस्थी के खर्चों में अनावश्यक वृद्धि होगी। परिवार में अतिथियों का आमनन बना रहेगा।

धनु

आर्थिक/वित्तीय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आय में वृद्धि होगी। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। महत्वपूर्ण कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होगा।

मकर

अपने अति आवश्यक और महत्वपूर्ण कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। अटके हुए कार्य बनने लगे। नवीन कार्यों में उचित सफलता मिलेगी। खान-पान के कारण स्वास्थ्य खराब हो सकता है।

कुंभ

नवीन कार्यों में आरंभ अड़चनें दूर होने लगेगी। परिवार में सुख-सुविधाएँ बढ़ेंगी। परिवार में धार्मिक-सामाजिक समारोह सम्पन्न हो सकते हैं। परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा।

मीन

चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। नवीन कार्यों को टालना ठीक रहेगा। यात्रा में परेशानी हो सकती है। आर्थिक समस्या अभी बनी रहेगी। आज बतने कार्य विनाई सकते हैं।